सम्पादक की कलम से

रोजगार मूलक गुणवत्ता युक्त शिक्षा

मानव परिस्थितियों के अनुकूल उन्नति के शिखर तक पहुँचने का प्रयास करता है किसी भी क्षेत्र में सफलता पाना है तो सर्व प्रथम शिक्षा ही एक मात्र साधन है जो मानव के अरमानों को पूरा करने में मददगार हो सकती है। शिक्षा के लिए सभी प्रयास होते है सरकार नेता, संत महात्मा,माता–पिता परिवारजन सबकी सीख यही रहती है कि प्रत्येक मनुष्य को शिक्षित होना ही चाहिए। फिर जब शिक्षा का ही प्रश्न है तो कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो अपनो का शिक्षित करना नहीं चाहता या शिक्षित होना नहीं चाहता। बस यही पेंच समस्या का समाधान निकालना जरूरी है। फिर शिक्षित करना ही सबका लक्ष्य है तो फिर रोजगार मूलक शिक्षा के पाठ्यक्रम प्रारम्भिक शिक्षा से ही शुरू करना आवश्यक है। इसके लिए सरकार को अपनी शिक्षा नीति बनाना होगी, तभी लक्ष्य बनाकर पूरा किया जा सकता है।

अब आइये शिक्षा के लक्ष्य को कौन पूरा कर सकता है। यह दायित्व एकमात्र सरकार चलाने वालों पर निर्भर है। शासक यदि तय करले कि मेरी सम्पूर्ण प्रजा रोजगार मूलक शिक्षित हो तो, सब आसान है। इस आसानी को पूरा करने हेतु शासन को अपना लक्ष्य बनाना होगा, इसका बजट आरक्षित करना होगा। तद्नुसार शिक्षा नीतिकारों को इस लक्ष्य को पूरा करने हेतु दूरगामी नीति बनाना होगी। इस प्रकार से नीतियां बन जाय तो पाठ्यक्रम भी रोजगार मूलक शिक्षा का बनाना होगा। जो दलगत भावना से उपर हो यदि इस प्रकार से राजनैतिक दल हमारे देश में रोजगार मूलक शिक्षा अपने नागरिकों को देना चाहते है तो उनको अपने चुनावी घोषणा पत्रों में इस लक्ष्य के लिए स्पष्ट उल्लेख कर मतदाताओं से अपने पक्ष में मतदान कराना होगा। यह सब राजनैतिक दलों की नीतियां पर ही निर्भर है।

यह लक्ष्य भी बनाना होगा कि हम रोजगार मूलक निशुल्क शिक्षा देना चाहते है। यदिइस प्रकार शिक्षा नीति के लक्ष्य बनाकर प्रजा के समक्ष अपना अजेन्डा प्रस्तूत कर दिया हो प्रत्येक इन्सान अपनी सन्तान को शिक्षित कराने हेतु अवश्य सामने आयेगें। और एक समय शिक्षानीति के अनुसार ऐसा भी आयेगा, कि हमारे सभी नागरिक शिक्षित ही नहीं रोजगार मूलक शिक्षा प्राप्त किये हुए ही होंगे।

यदि रोजगार मूलक शिक्षित लोगों को देश के किसी क्षेत्र में लगाया जायेगा तो इनकी गुणवत्ता युक्त शिक्षा राष्ट्र की समस्त आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, सभी नागरिक इस शिक्षा अभियान के लिए तत्पर रहेंगे।

हमारे महापुरूष सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतिराव फुले प्रथम शिक्षिका सावित्रीबाई फुले बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर जैसों के सपनों का राष्ट्र बनाने हेतु सरकार का यह दायित्व है कि संविधान में प्रदत्त नागरिक अधिकरों में शिक्षा का अधिकार पूरा करने हेतु निश्चित रूप से पहल कर अपनी ''सर्वशिक्षा अभियान'' को नीतियों को ठोस एवं दूरगामी बनाकर प्रभाव शीलकरने हेतु कदम उठाना प्रारम्भ करें।

वैसे हमने आजादी के बाद शिक्षा के क्षेत्र में अनेक आयाम छुए है इसी कारण हमारे होनहार शिक्षित प्रशिक्षित नवयुवक अपने देश ही नहीं दुनिया में विभिन्न क्षेत्रों में देश को नाम रोशन कर रहे है। यह हम सबके लिए गौरव की बात है।

किन्तु यह भी समझना जरूरी है कि, क्या हमारे देश के कमजोर धनहीन परिवार की संतान भी इतनी महँगी शिक्षा दिला रहे है, बस यही अखरने वाली बात है। जिनके पास धन है, पैसा है वे संतानों को शिक्षित प्रशिक्षित करवाने में सफल हो रहे है। परन्तु धनहीन परिवार इस समस्या से कोसें दूर है। इसी कारण हमारे महापुरूषों ने रोजगार मूलक निःशुल्क शिक्षा का आव्हान किया है। एक धारण यह भी बनाई जा रही है कि कमजोर धनहिन परिवार ओबीसी, अनुचित जाति–अनुसूचित जनजाति के परिवार में जन्म लेने पर तो इनकी बुद्धि ही कमजोर होती है इस कारण अपर कास्ट के परिवार में जन्म लेने वालों का ही यह शिगूफा चलता रहता है। किन्तु यह चिंतन भ्रम फैलाने वाला है। यदि इन पिछड़ी जातियों के परिवार में जन्म लेने वाले बच्चे को अवसर मिल जाय तो वह भी किसी भी मानव की भाँति अपने आपको प्रत्येक क्षेत्र में ऊँचाईयां छूने से पीछे नहीं रह सकता है। इस मिथ्या भ्रमजाल को तोड़ने हेतु ही डॉ. भीमराव अम्बेड़कर जो कि अनुसूचित जाति के परिवार में पैदा हुऐ उन्हें शिक्षा पाने का अवसर मिला और उनकी डिग्रियों को देखें तो उनके मुकाबले मुश्किल से ही कोई दूसरा व्यक्ति मिलेगा। तो यह धारणा तो केवल अपर कास्ट की फैलाई हुई है, इसी कारण देश के संसाधनों पर उनका सभी क्षेत्रों में बर्चस्व है। इनकी संताने भी प्रायः इन्हीं के नक्शे कदम पीढ़ी–दर–पीढ़ी उन्नति के शिखर पर पहुँच रही है। अपना सुख–भोग करने हेतु इनके पास आर्थिक समस्या नाममात्र की भी नहीं होती है। इस परिपेक्ष में ही यह उल्लेख है कि सरकार को शिक्षण–प्रशिक्षण हेतु अपने बजट की बड़ी राशि व्यय करने हेतु सर्व प्रथम प्रावधान करना ही उद्देश्यों को पूरा करने हेतु कठोर प्रावधान करने होंगे, ताकि प्रत्येक नागरिक समुचित शिक्षण– प्रशिक्षण लेकर सक्षम मानव बन सके। अपना अपने परिवार का अपने क्षेत्र का अपने राष्ट्र का स्वाभीमान ऊँचा करने में सफल हो सके।

हम आगामी लोक सभा चुनाव की दहलीज पर खड़े है। राजनैतिक दलों को अपने प्रत्याशियों जिताने हेतु घोषणा पत्र। संकल्प पत्र बनाना होंगे यदि इनमें शिक्षा बजट का दिल्ली की केजरीवाल सरकार की भाँति प्रावधान हो तो फिर आने वाला भारत का भविष्य चरित्रवान, इमानदार पर शिक्षित– प्रशिक्षित होकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाने वाला सिद्ध होगा । मतदाता इस दिशा में चिंतन कर प्रयास करें।

आइये हम रोजगार मूलक गुणवतायुक्त निशुल्क शिक्षा की नीतियां बनवाने हेतु अपने–अपने स्तर से पहल प्रारम्भ हरे।

रामनारायण चौहान

10 मार्च 2019 को परिनिर्वाण दिवस पर स्मरण एवं प्रतिज्ञा

क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फुले की मानव सेवा

10 मार्च को प्रथम शिक्षिका ज्ञानज्योति सावित्री बाई फुले का 122 वाँ परिनिर्वाण दिवस है। हम यह जरूर समझे कि हमारे देश में तत्कालीन स्त्री समाज की कैसी दशा थी। फिर उनको मानवीय अधिकार दिलाने हेतु कौन–कौन आगे आये स्त्रीयों को कब से पुरूषों के समान शिक्षा एवं जीवन जीने की शुरूआत हुई। आज के सन्दर्भ में नारी कितनी उँचाई के शिखर पर पहुँच रही है। यह विश्लेषण करना सावित्री बाई फुले के 122 वें परिनिर्वाण दिवस की सार्थकता समझाने का प्रयास है। तत्कालीन स्त्री समाज :

–: तत्कालीन स्त्री समाज :–

प्रारम्भ में देश का पुरूष इस तथ्य को समझने में असफल ही रहा कि स्त्री में भी बुद्धि है, एवं उसका भी स्वतंत्र व्यक्तित्व है, उसको भी मानवाधिकार है? उन्नीसवी सदी तक नारी गुलाम रहकर सामाजिक व्यवस्था की चक्की में पिसती रही। अज्ञान–अंधकार, कर्मकाण्ड, वर्णभेद, जाति–पाति, बालविवाह, मुंडन तथा सती प्रथा जैसी अमानीय स्थितियों से नारी का जीवन गुलामी से भी बदत्तर रहा था, स्त्री अपना अस्तीत्व खो चुकी थी, तथा परावलम्बी जीवन जीने की आदि हो गई थी। वैदिक कालीन मनुवाद ने नारी का जीवन अस्तित्व ही नष्ट कर दिया था। मनु ने श्लोक ।। 4 ।। के अनुसार देववाणी के रूप में नारी का कामवासना पूर्ति का एक साधन मात्र बताया जब उद्दालक ऋषि के पुत्र श्वेतकेतु ने विवाह की शुरूवात की बाल–विवाह, तथा अनमेल विवाह की स्त्री शिकार रहती थी। यहाँ तक की बेटी अथवा पत्नि तो सम्पत्ति मानकर जुआ खेलते समय उसकी हार–जीत की बाजी में झोकने के "द्रोपदी का उदाहरण शास्त्रो में है। नारी दशा का उल्लेख राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दो में :

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

1818 में पेशवाशाही का अन्त होने तक यही सिलसिला चलता रहा। 1827 में सामाजिक क्रांति के जनक महात्मा जोतीराव फुले का 11 अप्रैल को जन्म हुआ। उनका 1841 में सावित्री बाई से विवाह हुआ। फुले की शिक्षा संघर्ष पूर्ण परिवेश में हुई, उन्होंने तत्कालीन स्त्री दशा को गुलामी से मुक्त कराने की ठान ली, अपनी अशिक्षित पत्नि सावित्रि बाई को शिक्षित किया, प्रशिक्षित किया और 1848 में पहली कन्या पाठशाला पुना में भिड़ेजी की हवेली में प्रारम्भ की जिसमें चार ब्राम्हण एक धनगर, एक मराठा जाति की लड़कियों से नारी शिक्षा का सौपान प्रारम्भ कर दिया। इसके बाद तो पुणे, सातारा, माजगाँव, भिंगार में 1–1–48 से 15–3–1952 तक कुल 18 पाठशला प्रारम्भ कर दी जिसमें महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, सुगुणा बाई क्षीरसागर, विष्णुपंत थत्ते, वामनराव खराटकर तथा फातिमा शेख पढ़ाती थी। फुले दम्पत्ति को ब्राम्हण विरोधि कहना सरासर गलत है। वे तो ब्राम्हणवाद के कारण पीड़ित मानव के उद्दारक है।

यह भी उल्लेखनीय है कि मुस्लिम फातिमाशेख को भी फुले ने शिक्षित कर प्रथम शिक्षिका बनाकर मुस्लिम समाज में भी क्रांतिकारी उदाहरण पेश कर दिया था।

सावित्री बाई ने यह सिद्धांत पेश किया कि :

"जिस समाज और परिस्थिति से लड़के–लड़कियां आते है, उसका असर संबंधित लड़केलड़कियों के ज्ञानीजन पर भी होता है।"

इसी प्रकार जोतीराव फुले स्वयं लिखते है :

"मेरा ध्यान सबसे अधिक लड़कियों की पाठशाला ने आकृष्ट किया। गहन विचार के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि इन पाठशालाओं की आवश्यकता लड़को की पाठशाला से भी अधिक है, क्योंकि सुशिक्षित माताओं द्वारा ही शिक्षा के पाठ बच्चों को हृदयंगम कराये जा सकते है।"

नारी मुक्ति आंदोलन की प्रथम नेता :

सावित्री बाई फुले देश की पहली नारी मुक्ति आन्दोलन की नेता है। उन्होंने नारी शिक्षा का सूत्रपात किया। मुस्लिम नारी शिक्षा की शुरूआत की। उस्मान शेख बेग के यहाँ बाल हत्या प्रतिबंध गृह की स्थापना की। विधवा मुण्डन प्रथा समाप्त कराई। विधवा पुर्नविवाह प्रारम्भ कराये। सतीप्रथा के विरूद्ध जनजागृति फैलाई। विधवा सन्तान की परवरिश की। विधवा ब्राह्मणी काशीबाई के पुत्र यशवंत का लालन–पालन कर गोद लिया। अर्न्तजातिय विवाह भी देश में प्रथम बार पुत्र यशवंत का किया। नारीमुक्ति के लिये कुरीतियाँ, रूढ़ीवादी रीतिरिवाजों को समाप्त कराकर सत्यशोधक समाज से संस्कार की नींव रखी। 18 पाठशालाएँ खोली। छोटे–छोटे उद्योगो (गृह उद्योग) की व्यवस्था की। मानव सेवा के लिये गहनरोगीयों का इलाज कराने उनको अपनी पीठ पर लादकर उपचार कराने की सेवा की। पति, ससुर, परिवार को विश्वास में लेकर शिक्षा एवं मानव सेवा, साहित्य रचना की। निडर एवं साहसी जीवन का लक्ष्य पूरा किया।

इस प्रकार सावित्रीबाई फुले नारी मुक्ति आन्दोन की प्रथम नेता थी।

साहित्य श्रृजनः

सावित्री बाई फुले प्रतिभा सम्पन्न कवयित्री, कुशल शिक्षिका, निस्वार्थ समाज सेविका, जोतीराव फुले की मृत्यु 28 नवम्बर 1890 के बाद उनके द्वारा छोड़े अधूरे कार्यो को पूरा कर साहित्य श्रृजन की महानायिका जो कि मानवी समता, न्याय एवं स्वतंत्रता के मूलभूत सिद्धांतो पर आधारित लोक साहित्यकार थी, जो विश्व बन्धुत्व की अलख जगाने वाली साहित्यकार थी। प्राप्त साहित्य जो सावित्रीबाई फुले ने लिखे उनमें (1) काव्यफुले 1854 (2) बावनकशी सुबोधरत्नाकर (काव्य संग्रह) (3) मातुश्री सावित्रीबाई के भाषण, गाणी–विषय, उद्योग व विद्यादान (1891) (4) ज्योतिबा भाषण भाग 1 से 4 (सम्पादक सावित्री बाई)। (5) सावित्री बाई के विविध विषयों पर भाषणा (6) सावित्रीबाई द्वारा ज्योतिबा फुले को लिखे गये दो पत्र।

इस प्रकार सावित्रीबाई फुले प्रतिभासम्पन्न लेखिका व कवि थी।

मृत्यु :- (परिनिर्वाण)

पुना के आसपास प्लेग की बीमारी का प्रकोप फैला था। इसकी चपेट से आये, पीड़ितों को अपनी पीठ–कन्धा पर लादकर अस्पताल लाने के कारण वे भी प्लेग ग्रसित हो गई व 10 मार्च 1887 को उनका परिनिर्वाण हो गया।

सावित्री बाई फुले एक ममतामयी, त्यागमयी, आदर्श नारी थी। जिन्होंने अपना समस्त जीवन उन्नीसवीं शताब्दी के रूढ़िवादी समाज की कुप्रथाओं को समाप्त कराने मानव सेवा करने, एवं नारी शिक्षा के प्रोत्साहन में लगा दिया।

वर्तमान युग में जो नारी स्वतंत्रता, पुरूषों के समान अधिकार सम्पन्न होने, शिक्षित होकर परिवार एवं राष्ट्र सेवा करने, समाजसेवा करने की जो मिसाल बन रही है व नीचे से उपर तक के पदों, खेलकुद, विज्ञान राजनीति, शिक्षा आदि क्षेत्र में कीर्तिमान बनाकर समतामय समाज की प्रहरी बनी है। इसके लिये समस्त नारी जगत, सावित्रीबाई फुले की ऋणी है। भारत सरकार द्वारा स्थापित "भारत रत्न'' पुरस्कार के लिये फूले दम्पत्ति को क्यों भुलाया जा रहा है? राष्ट्रसंघ द्वारा सावित्री बाई फूले के परिनिर्वाण के 2 दिन पूर्व 8 मार्च को' अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस" घोषित किया गया है। भारत सरकार द्वारा सावित्री बाई फुले की स्मृति में डाक टिकिट भी जारी किया है। चयन समिति जरूर विचार करें।

सावित्री बाई फुले के 122वें परिनिर्वाण दिवस 10 मार्च को हम प्रतिज्ञा ले कि फुले दम्पत्ति के आदर्शों के अनुकूल मानव समाज को संविधान में प्रदत्त अधिकारों को दिलाने हेतु सतत् कार्य करते रहेंगे।

रामनारायण चौहान

सामाजिक चिंतन (भाग-21)

पदों की दौड़ में आगे आने की प्रतिस्पर्धा

जिस समाज में लोग किसी भी सार्वजनिक कार्य के लिये आगे बढ़ने की सौंच ही नहीं सकते थे, और 8–10 प्रतिशत आबादी के लोगों से शासित रहने की परम्परा मान कर सादा जीवन परिवार सहित जीने के आदि थे, शिक्षा के नाम पर "काला अक्षर भैंस बराबर" में ही विश्वास करते थे। महिलाऐं चौका, चूल्हा, कृषि, पशुपालन बच्चों के लालन–पालन तक ही सीमित थी, इन्हें पढ़ने लिखने का तो कोई अधिकार ही नहीं था। ऐसे में युग बदला, विचार बदले, सरकारे भी बदलती गई, परिवार की समझ विकसित होने लगी, परिणाम समाज में अपना स्थान पाने हेतु पदों में आगे आने की प्रतिस्पर्धा के युग में आ गया।

हमारे वरिष्ठ जनो को सब पता है, वे किस परिवेश में जीवन यापन करते रहे और आज की भाग दौड़ की जिन्दगी में सबसे आगे निकलने की होड़ सी मची हुई है। चाहे धनवान, मध्यम, गरीब कोई भी हो प्रायः सब आगे बढ़ने हेतु तत्पर है।

हम 15 अगस्त 1947 को आजाद हुए 26 जनवरी 1950 से हमारा संविधन प्रभावशील हुआ, बोलने, पढ़ने, लिखने, खाने, पहनने, रहने, संस्कार, रीति–रिवाज अपनाने , उत्सव मनाने, घूमने–फिरने, खाने–कमाने की दिशा में क्रांतिकारी बदलाव आ गया। इसी के साथ सामाजिक संस्थाओं, राजनैतिक संस्थाओं, उद्योग–व्यापार की संस्थाओं, शासन के विभागों उनकी संस्थाओं के पदों पर पहुंचने की समझ विकसित होने लगी। आर्थिक रूप से सक्षम बनने लगे। शिक्षित होकर ग्लोबलव्यक्ति की समझ बना कर प्रतिस्पर्धा में शामिल कर अपनी हैसियत स्थापित करने हेतु तत्पर रहने लगे। यह सब कैसे संभव हो पाया इसका सूक्ष्म चिंतन भी करना चाहिए।

सामाजिक क्रांति के जनक महात्मा जोतीराव फुले, सावित्रीबाई फुले, नारायाण मेघाजी लोखण्डे(मजदूर नेता) ने तत्कालीन युग में कठोर संघर्ष किया और समतामय समाज बनाने, सबको रोजगार मूलक शिक्षा पाने, समस्त मानवीय अधिकार के अवसर और समानता पाने का अभियान चलाया। इसी का परिणाम है कि छत्रपति शाहू महाराज ने अपने राज्य में ओबीसी को आरक्षण देकर ऊँचे पदों तक पहुँचने का अधिकार दे दिया। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर ने हमारा ऐसा संविधान बनाया जो मानव को समान अवसर देता है, और समान अवसर पाने तक दबे, कुचले, अधिकार विहीन लोगों को आरक्षण देकर आगे बढ़ाने का अधिकार देता है। इसी अधिकार के कारण मानव न्यायालय में जाकर भी अधिकार सम्पन्न बन सकता है। अब अनेक प्रकार की संस्थाऐं बनकर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही है, इन संस्थाओं को कानूनन संविधान सम्मत बनाकर, जन सेवा करने, अधिकार पाने, सामाजिक संस्थाऐ बनाकर मानव कल्याण के कार्य करने का अवसर मिल गया। इसी कारण अनेक संस्थाएँ बनी, इसके पदाधिकारी बनने की होड़ भी मची, यह बहुत ही सराहनीय जागरूकता है।

हम देख रहे है एक ही समाज की अनेक–अनेक नाम की संस्थाऐं पंजीकृत है, और इनके पदों पर पहुँचने हेतु सभी प्रकार के दाव–पेंच चलते रहते है। कई तो केवल कागजी संस्थाएँ ही बन चुकी है। कई मानव समाज सेवा के कार्य भी कर रही है। जो कार्य कर रही है व सार्वजनिक भलाई, फिजुलखर्ची को रोकर समाज के कमजोर पक्षों को सहायता देकर बराबरी से खड़ा करने में लगी हुई है। महिलाओं की अलग–अलग संस्थाएँ बनने लगी है। याने अब जागरूकता आगे बढ़ रही है। समाज का उत्थान भी होने लगा है।

चिंतन यह है कि "अकेला चना–भाड़ भी नहीं फोड़ सकता" प्रत्येक व्यक्ति कहीं किसी भी संस्था में न कहीं समान्य सदस्य रहकर भी समाज को आगे बढ़ाने में योगदानी रह सकता है। यदि इस चिंतन पर चलने लगे तो समाज के लोगो को सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकार सम्पन्न करने में बड़ा सराहनीय कदम माना जायेगा। आइये समाज उत्थान के लिये अपने–अपने स्तर से योगदानी बनें। परस्पर योगदान की भावना बनाकर सामाजिक कल्याण मानव उत्थान के कार्य में सबको साथ लेकर चलने हेतु तत्पर रहे।

रामनारायण चौहान

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096
फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171
E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

सत्यमेव जयते

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।
मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- शिक्षादान की राशि रु. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूँ।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम
2. पिता/पति का नाम
3. जन्म तिथि 4. ब्लड ग्रुप
5. शिक्षा
6. व्यवसाय
7. वोटर कार्ड नं. 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं.
9. आयकर पेन कार्ड नं. 10. आधार कार्ड नं.
11. स्थायी पता

पिन कोड

12. पत्र व्यवहार का पता

पिन कोड

13. फोन/फैक्स नं. 14. मोबाईल नं.
15. ई-मेल

Passport Size Photo

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

कार्यालय उपयोग हेतु

श्री..... ने रसीद नं. ..... दिनांक ..... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

आपसी बात

शिक्षा इशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

माह - जनवरी से फरवरी 2019

- राजस्थान– एड. अनुभव चन्देल, पूनमचन्द कच्छावा, (जयपुर) नटवरलाल माली (बांसवाड़ा), बंशीलाल माली (भीलवाड़ा), मोती बाबा फुले, किशन लाल गहलोत (पाली), ओकावर कच्छावा (जोधपुर)।
- मध्यप्रदेश– पुरूषोत्तमदास अनुरागी (सतना) जगदीश सैनी (जबलपुर), राजेश दौड़के (छिंदवाड़ा), सुरेश सुमन (ब्यावरा), यादवलाल चौहान (इन्दौर), किशोर कुमार भाटी, विशाल चौहान, अशोक भाटी, लीलाधर धारवे गजानन्द रामी(उज्जैन), विनोद मकवाना (बड़नगर), यशवंत नेहरू (पीपलरावा), महेश सैनी (मन्दसौर), राजेश माली एड़. पी.सी. हारोड़े (देवास), जी.पी.माली, मधु अम्बाड़कर, राजेन्द्र अम्बाड़कर, डॉ. प्रेमलता सैनी, रामचरण माने, जगदीश सोलंकी, गजानंद भाटी (भोपाल)।
- छत्तीसगढ़– हरीश पटेल यज्ञदेव पटेल (बालोद),।
- दिल्ली– जी.एल. सैनी, चौ.इन्द्रराजसिंह सैनी, शिवराज सैनी, आर.पी. सैनी, एड. रमेश सैनी, रमेश कुमार सैनी, महावीर सैनी ।
- कर्नाटक– एन. एल. नरेन्द्रबाबू (बैंगलोर)।
- उत्तरप्रदेश– अवनीश सैनी (गाजियाबाद), श्रीचन्द सैनी, डॉ. नित्यानन्द सैनी (मेरठ), नारायण सिंह कुशवाह (आगरा) राजबहादुर सैनी (अमरोहा), एस.बी. सैनी (कानपूर) सोहनलाल श्रीमाल (इलाहबाद)।
- बिहार– संजय मालाकार, सत्येन्द्र प्रसाद, (पटना), मदनमोहन भक्त (भोजपुर–आरा), गौरीशंकर प्रसाद (पहलेजा) ।
- महाराष्ट्र– राजेन्द्र सैनी (मुम्बई)।
- हरियाणा– हेमन्त सैनी(रेवाड़ी),।
- उत्तराखण्ड– रामसिंह सैनी पूर्व मंत्री (रूढ़की)

महात्मा फुले की 192 वीं जयंति

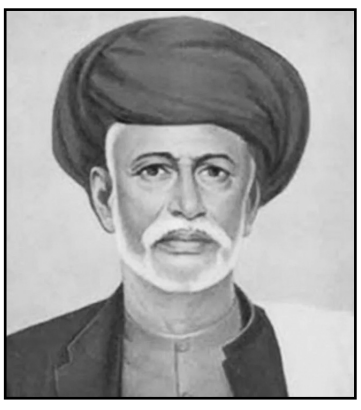

दिल्ली। सामाजिक शैक्षणिक क्रान्ति के जनक सत्यशोधक महात्मा जोतीराव फुले का जन्म 11 अप्रेल 1827 को पूना में हुआ था। उन्होनें कड़े संघर्षों का सामना करते हुए, सबको शिक्षा की अलख जगाई महिला शिक्षा में पत्नि सावित्रीबाई फुले को शिक्षित कर प्रथम शिक्षिका बनाया वे प्रथम कृषि शोधकर्ता, प्रथम श्रमिक संगठन, अंधविश्वास मिटाने, सति प्रथा समाप्त कराने, विधवा विवाह कराने, अर्न्तरजातिय विवाह कराने, वाचनालय बनाने, प्रोढ़शिक्षा दिलाने, छत्रपति शिवाजी महाराज का रायगढ़ किले की खोज, सार्वजनिक सत्यधर्म बनाने, सत्यशोधक समाज बनाने, कुरीतियां मिटाने, इमानदार जनप्रतिनिधि का दायित्व निभाने, साहित्य रचना करने, मानव को वैज्ञानिक आधारों पर चलाने संस्कारों में बिचौलिया प्रथा समाप्त करने, वर्णवादि व्यवस्था में शूद्रों को शिक्षित करने उन्हें अधिकार दिलाने आदि सामाजिक एवं शैक्षणिक, साहित्य के क्षेत्र में जनमानस को जगाया जीवन जीने की कला सिखाई।

भारत सरकार को फुले दम्पत्ति को भारतरत्न देना ही चाहिए। महात्मा फुले मानव सेवा करते हुए 28 नवम्बर 1890 को उनका परिनिर्वाण हुआ।

सम्पूर्ण भारत ही नहीं विदेशों में महात्मा फुले जंयति मनाई जाती है।

शोषक वर्ग राजकीय सत्ता से जादा महत्तव सामाजिक तथा सांस्कृतिक सत्ता को देते हैं जिससे वे अपने आधिन लोगों के मन पर कब्जा रख सकते हैं।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

मनष्य को भौतिक सुख सुविधा चाहे कितनी भी दे दो, लेकिन सही ज्ञान के बिना, अगर उनका मन विकसित नहीं हुआ तो, वह अपने जीवन को जीने का आनंद नहीं ले पायेगा।

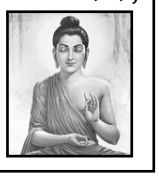

महात्मा बुद्ध

A FORGOTTEN LIBERATIOR, THE LIFE AND STRUGGLE OF SAVITRI BAI PHULE

ACKNOWLEDGEMENTS

The idea and encouragement for doing this book came from many activist friends, many of them - Dinesh Sandila, Manju Maurya, R D Lall, Ramnarayan Chauhan, Kanta Bhimrao and Dilip Ghawade- are carrying forward the struggle of Jotiba and Savitribai Phule. We owe them very special thanks.

Many thanks to the contributors who wrote for us at short notice. And our apologies to those, whose writings we could not accommodate in this book despite our best intentions, due to many constraints.

We acknowledge our debt to the publication division of the government of Maharashtra for the photographs] portraits, and paintings, including the one on the cover that we have reproduced in this book, our heart-Felt thanks to Subhash Goliat for the Excellent drawings.

The Broken … Restored

Special Thanks to Graham and his colleagues at Mountain peak for their editorial support, and keen interest in the production of the book.

Lastly, we thank Neha Wadhawan who did the copy-editing at the eleventh hour at our request.

INTRODUCTION

BRAJ RANJAN MANI

BY:- BRIJ RANJAN MANI & PAMELA SARDAR

Knowledge-production, reproduction of culture, and historiography in contemporary India- with some exception of challenging attempts in recent years-remains deeply biased and brahmanical, despite the dazzling democratic façade and politically correct vocabulary. Contestations to the dominant discourse and meta-narratives of the past and present by the marginalised majority- dalits, adivasis, other backward classes (OBCs), Muslims, Sikhs, Christians, and other suppressed ethnic and regional communities-remains confined to the margins; while brahmanical hegemony continues to overwhelm the intellectual domain. In place everywhere are refurbished, replenished brahmanical canons and constructs which are blithely flaunted as 'Indian' and 'national' this, so much so, that the modernization of brahmanical tradition easily becomes the modernization of Indian tradition. The Indian elite's winning trick, right from the colonial nineteenth century to the present, is to selectively cull from the modern European ideas and institutions, and ingeniously align and integrate them with the brahmanic structures of caste, class, and gender. The Basic design behind such 'change with continuity' is to preserve and innovate upon traditional dominance over the masses. As in the past, so in the present, the over-all objective is to mislead, exploit and exclude the majority.

India remains the most iniquitous society on the earth. The more things change, the more they remain the same. Extreme disparities in terms of wealth, health, and education have given birth to a new form of two-India. Just over ten percent of the population, mostly from aggressive castes, with different levers of power in their hands, make sure that the rest continue to live in material and mental subjugation, and provide the 'nation' their cheap labour. While all wealth generation and development are taken up in the name of empowering the poor, such 'nation-building' leaves the poor more demoralized, more marginalized. They still struggle for food, drinking water, sanitation, education who are these people? More than ninety percent of them are adivasis, dalits, OBCs, and Muslims. Their representation in the booming market economy, business and industrial domain, information technology, and entertainment industry is next to nothing. However, the embedded brahmanic media and academia presents the growth without equity as development with a humane face. Caste as institutionalized discrimination, both at material and ideological-cultural levels, continues to cripple the lives of millions in several and covert ways.

Caste has for centuries been the major civilisational fault-line in the Indian subcontinent. To cut a long and complicated story, The supposed divine division of labour and harmony of caste has always dazzled its creators and beneficiaries, while the demoralized majority condemn it as a vicious system of brahmanic colonialism- the colonialism that drains away the cultural, social, and economic resources within the nation from the productive majority to the parasitic few ensconced at the top of the caste hierarchy. The toxic genius of caste hierarchy and its creators is to divide, disintegrate and dehumanize the toiling majority. Fragmented into hundreds of hierarchically arranged castes and subcastes, each sparring with each other for meager resources, the productive people fail to build a broader solidarity against their common exploiters.

Birth-based caste provides a breeding ground for mutual animosity. Thus, keeping people divided and weak for exploitation as well as making common activity and effort for the greater good impossible. It was for this precise reason that the caste culture has been patronized and promoted by authoritarian kings and feudal-aristocratic forces of many stripes, including the medieval Mughals and modern British colonizers who saw in caste and Brahmanism a uniquely effective tool to subjugate and rule the masses. Colonialism in india, contrary to the dominant belief] was wedded to the forces representing caste and Brahmanism This colonialism was founded on the collusion, collaboration, and mutual interests of British and Indian ruling classes and intelligentsia. The native political and intellectual elites not only provided crafty, selective knowledge to the British about India and things Indian, but also controlled the Raj machinery at the local and intermediate levels. They oiled the wheels of colonialism, playing the role of the intermediary between the British rulers and Indian masses. Self-strengthening and modernizing themselves with this collaboration, the Indian elites gradually found confidence to build their own brahmanic-casteist nationalism, pretended to represent all Indians, demanded and got a greater share of power within the Raj, and finally launched the movement to kick out the British (Aloysius 1997; Mani 2005).

Continued...

स्मृति शेष माँ सावित्री बाई फूले की 120वीं पुण्य तिथि 10 मार्च 1897

तथागत बुद्ध ने आज से 2500 वर्ष पूर्व जिस बहुजन (शूद्र) हिताय, बहुजन सुखाय का नारा दिया था उस विचारधारा की अग्नि ठंडी पड़ चुकी थी। सर्वप्रथम 1848 में महामना फूले एवं उनकी सह धर्मिणी/संघर्षणी, उनकी पत्नी माँ सावित्री बाई फूले ने उस क्रान्ति अग्नि को प्रज्वलित कर हम लोगों को जागरुक किया उसके लिए हम सब सदा फूले दम्पत्ति के ऋणी रहेंगे।

यह सच है कि महामना फूले न होते तो सावित्री बाई फूले को भी लोग न जानते और न वह भारत की प्रथम शिक्षिका बन पाती परन्तु वहीं दूसरी तरफ यह भी नकारा नहीं जा सकता कि यदि सावित्री बाई फूले का साहस, धैर्य, संघर्ष महामना फूले को न मिलता तो कारवां जितना आगे बढ़ सका न बढ़ पाता क्योंकि 1888 में जब महामना फूले लकवा ग्रस्त हो गये तो उन्होंने बांये हाथ से सार्वजनिक सत्य धर्म नामक पुस्तक लिखी जिसको सावित्री बाई फूले ने मरणोपरान्त (1890 के बाद) प्रकाशित करवाया। सत्य शोधक समाज के संगठन को गांव तक 1891 से 1897 तक पहुँचाया। इस प्रकार उनके द्वारा समाज सुधार, शिक्षा, दलित/अनाथ सहायता, विधवा सहायता का कार्य बड़ी ही निष्ठा के साथ किया गया।

सार्वजनिक सत्य धर्म के सिद्धान्तों द्वारा ही विश्व में मानववाद, नारी उत्थान सम्भव हो सकता है यह पुस्तक विश्व धर्म की पुस्तक है इसे यू0एन0ओ0 के पुस्तकालय में होना चाहिए। यह सभी धर्मों का विश्व कोष **Encyclopedia** है। इस पुस्तक के प्रकाशन में मात्र सावित्री बाई फूले का विशेष योगदान है। ज्योतिबा के जीवन दर्शन पर पश्चिमी विचारक थामस पेन, जान स्टुअर्ट मिल तथा मार्टिन लूथर किंग का बड़ा प्रभाव था परन्तु इस वैचारिक ज्ञान को व्यवहारिकता में बदलना सावित्री बाई फूले के अदम्य साहस से ही सम्भव हो सका

यह भी एक संयोग की बात है कि वर्ष 1890 (ज्योतिबा फूले मरण वर्ष) में पहली बार पेरिस के नारी सम्मेलन में **Woman** के स्थान पर **Feminine** शब्द का प्रयोग किया गया तथा वर्ष 1897 में (माँ सावित्री बाई फूले का मरण वर्ष) जर्मनी में पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय नारी सम्मेलन हुआ जिससे वैश्विक स्तर पर नारी सशक्तीकरण का कार्य प्रारम्भ हुआ। ऐसा लगता है वह काल खण्ड ही समाज सुधारकों का काल खण्ड था।

8 मार्च, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष

रूवर्ष 1848 दुनिया की क्रान्ति का प्रारम्भ वर्ष था। इसी वर्ष काल मार्स ने अपना कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो (दास कैपिटल) प्रकाशित किया था जिसके बाद दुनिया के मजदूरों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। 1848 में ही यू.एस.ए. के न्यूयार्क की वेल्सियन चर्च में नारी उत्थान की पहली सभा हुई ताकि दुनिया की समस्त महिलाओं का विकास किया जा सके। वर्ष 1848 में ही लॉर्ड मैकाले के प्रयास से भारतीय दण्ड संहिता (इंडियन पेनल कोड) का लिखा जाना प्रारम्भ हुआ ताकि ब्राम्हण को भी समान अपराध के लिए समान दण्ड मिल सके जो कि मनुस्मृति के आधार पर ब्राम्हण दण्ड से बच जाता था।

वर्ष 1848 में महामना फूले ने नारी शिक्षा हेतु तमाम स्कूलों को प्रारम्भ करवाकर सिद्ध किया कि शिक्षा के बिना स्त्रियों की दशा नहीं सुधारी जा सकती है। इस कार्य में उन्हें कुछ मुस्लिम महिलाओं जैसे बहन फातिमा कोभी स्मरण किया जाना चाहिए जिन्होंने फूले दम्पत्ति की आर्थिक परेशानी में बहुत मदद की। इसी प्रकार झलकारी बाई जिन्होंने झांसी में अंग्रेजों से युद्ध किया, ऊधा देवी, अहिल्याबाई आदि तमाम महिलाओं ने अतीत में अपने–अपने क्षेत्रों में शूरता वीरता का परिचय दिया। परन्तु ब्राम्हणी साहित्यकारों और इतिहासकारों ने इन छोटी जाति की महिलाओं का कहीं गुणगान नहीं किया, यह कितनी खेदजनक बात है। इसी प्रकार तमाम ऐसी महिलायें नींव के पत्थर की तरह हैं जिन पर नारी सम्मान आज भी गर्व करता है।

भारत में महिलाओं की स्थिति अन्य राष्ट्रों की तुलना में सर्वाधिक सोचनीय है। विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र में महिलायें सर्वाधिक उपेक्षा की शिकार हैं, उसका मूल कारण शिक्षा की कमी एवं ब्राम्हणी व्यवस्था का पोषक होना है। इस अवस्था से निकलने का एक ही मार्ग है कि बहुजन पुरुष वर्ग अपनी महिलाओं, बेटियों, बहुओं को शिक्षित करे, परम्परा के स्थान पर उन्हें वैज्ञानिक सोच का बनाये। अन्धविश्वास, पाखण्ड के षडयंत्र से उन्हें बचाये यह समय की एक आवश्यक आवश्यकता है तथा प्रतिवर्ष 8 मार्च को संकल्प लें कि जब तक देश की आधी आबादी (महिला) विकसित नहीं होगी राष्ट्र भी विकसित नहीं हो पायेगा और इसके लिए योजनाबद्ध ढंग से समयबद्ध सीमा में हमको कार्य करना ही होगा, इसी में नारी समाज का तथा राष्ट्र का सम्यक विकास सम्भव है।

1897 में संक्रामक बीमारी में सहायता कार्य करते हुए वह स्वयं संक्रमित होकर 10 मार्च 1897 को इस पृथ्वी गृह से विलीन हो गईं। हम देखते हैं इस प्रकार सावित्री बाई फूले सम्पूर्ण फूले मिशन की नींव की पत्थर हैं। 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है, 10 मार्च (पुण्य तिथि) को हम भारतीय महिला दिवस के रूप में तथा महामना फूले को हम भारत रत्न दिलाने के लिये आन्दोलन के लिए कमर कसनी होगी अन्यथा यहाँ सुनने वाला कोई नहीं है। यह करके ही हम उनके स्वामिभक्त वंशज हो सकेंगे। यदि हमने ऐसा न किया तो आने वाली पीढ़ी का कोपभाजन हम सबको बनना पड़ेगा। किसी ने सही कहा है –

बद दुआ देंगे हमें बाद में आने वाले
मकां बनता या न बनता नींव तो रख देते।

एस0बी0 सैनी **(B.E.)**
पूर्व मण्डल अभियन्ता **BSNL**
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576

देश भर के समाचार

● उज्जैन (म.प्र)– पूजा भाटी राज्य प्रशासनिक सेवा में 62वीं रैंक पास कर नायब तहसीलदार के पद पर चयन होने पर बधाई।

● इन्दौर (म.प्र)– मुराई मौर्य समाज द्वारा 10वाँ सामूहिक विवाह समारोह। बधाई।

● मुम्बई (महा)– श्रीमति भाग्यश्री माली बनाईत धीवरे IAS डायरेक्टर सेटिकल्चर को बेस्ट इमर्जिंग अवार्ड केन्द्रिय मंत्री सुषमा स्वराज एवं श्रीमती स्मृति ईरानी ने दिया। बधाई।

● नीमच (म.प्र)– 17 फरवरी को रोजगार प्रशिक्षण सम्मान समारोह का आयोजन उक्तजानकारी एड. विनोद माली अक्षय सैनी रीना सैनी, सर्मथ माली ने दी।

● पुणे(महा)– 16 फरवरी को शंकरराव लिंगे पूर्व अध्यक्ष पूर्व महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान द्वारा समाजिक न्याय एवं अधिकारिता पर एक सम्मेलन में विचार व्यक्त किये।

● व्यावरा (म.प्र)– सुरेश सुमन जिला समाज अध्यक्ष ने बताया कि ग्राम बड़ोदिया जागीर में गुना चाचोड़ा राजगढ़ व राजस्थान के प्रतिनिधियों ने महात्मा फुले सावित्री बाई फुले के आदर्शों के अनुरूप शिक्षा के महत्तव को आगे बढ़ाये का संकल्प लिया।

● भानपूरा (म.प्र)– सब्जी मण्डी का नाम महात्मा फुले दम्पत्ति के नाम पर रखने हेतु ज्ञापन दिया।

● कोटपूतली (राज)– ग्राम दादूका में 6वाँ आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन 10 फरवरी को हुआ। इस अवसर पर महात्मा फुले एवं सोहनलाल सैनी की मूर्ति का अनावरण सांसद मदनलाल सैनी द्वारा। उक्त जानकारी रामसिंह सैनी ने दी।

● जयपुर (राज)– 8 मार्च को समाज द्वारा दहेज मुक्त विवाह समारोह का आयोजन। सम्पर्क सागरमल सैनी 9413764361 ।

● जयपुर (राज)– 10 फरवरी को महात्मा ज्योतिबा फुले राष्ट्रीय संस्थान की और से द्वित्तीय सामुहिक विवाह सम्मेलन। बधाई।

● बैंगलोर (कर्नाटक)– माली सैनी समाज दक्षिण द्वारा 10 फरवरी समाज सेवियों का सम्मान किया गया। उक्त जानकारी अशोक माली, लक्ष्मण तेजाराम माली, ओगइराम सोहनलाल ने दी ।

● उज्जैन (म.प्र)– गुजराती रामी माली समाज के अध्यक्ष यादवलाल चौहान एवं गजानंद रामी ने बताया कि समाज द्वारा प्रादेशिक स्तर का परामपरागत सामूहिक विवाह सम्मेलन नरसिंहघाट धर्मशाला में 10 फरवरी को हुआ।

● सागर (म.प्र)– 17 मार्च को कुशवाह समाज का युवक–युवति परिचय सम्मेलन । सम्पर्क अर्जुन पटेल 9827250877

● पुणे(महा)– वरिष्ठ समाजसेवी उद्योगपति कृष्णकांत कुदेल का 10 फरवरी को निधन । श्रद्धाजंली।

● नीमच (म.प्र)– 17 फरवरी को सखनिया महाराज में खेल और सम्मान समारोह एवं रोजगार सम्मेलन आयोजित खेल प्रतिभाओं को अतिथियों ने सम्मानित किया। उक्त जानकारी राज माली ने दी।

● गंगापुर (राज)– गोपाल लाल माली जिलाध्यक्ष ने बताया कि नगर में महात्मा फुले ण्वं सावित्रीबाई फुले की प्रतिभा बनाकर लगाने हेतु उद्योगपति रिजु झुनझुनवाला ने घोषणा की बधाई ।

● कन्नौज (उ.प्र)– 11 अप्रैल को संयुक्त माली समाज द्वारा युवक–युवति परिचय सम्मेलन 7 मई को सामूहिक विवाह समारोह आयोजित उक्तजानकारी राजेश चौहान एवं राजेश बागवान जिला अध्यक्ष ने दी।

● बडौदिया बून्दी (राज)– 6 मई को 14 वाँ हाड़ोती माली समाज सामूहिक विवाह सम्मलेन 2 मई से प्रारम्भ होगा। गोपाल टांक ने उक्त जानकारी दी ।

● कडोदिया झालावाड़ (राज)– 2 मार्च को फूलमाली समाज एवं मध्यप्रदेश की संयुक्त पंचायत आयोजीत/उक्त जानकारी घनश्यामजी ने दी।

● पुष्कर(राज)– अखिल भारतीय माली सैनी सेवा सदन संस्थान के अध्यक्ष हेतु चुनाव 3 मार्च को । उक्त जानकारी मुख्य चुनाव अधिकारी ताराचन्द गेहलोत ने दी।

● चन्द्रपुर (महा)– 26 फरवरी को वंचित समाज ऐलगार परिषद चाँदा क्लब ग्राउण्ड में एड. राजेन्द्र महाडोल द्वारा आयोजित।

● अकोला (महा)– खण्डाला में कृषि रत्न गजानन वानखेड़े इजराईल की कृषि का अध्यन का उन्नत फसल करने से कृषि मंत्री द्वारा उद्यान पंडित कृषि मित्र, कृषि रत्न, महात्मा फुले पुरस्कार से सम्मानित किया।

● पुणे (महा)– 23 फरवरी को समता भूमि फुलेवाड़ा महात्मा फुले पेठ अग्नि शामक केन्द्र के पास सावित्री फातिमा विचार मंच द्वारा शिव जंयति के अवसर पर समारोह युक्त जानकारी एड. संभाजी बोरूडे अध्यक्ष ने दी ।

● मकराना (राज)– 8 मार्च को समाज द्वारा सामूहिक विवाह समारोह, उक्त जानकारी नवरत्नमल सिंगोदिया ने दी।

● अजमेर (राज)– 8 मार्च को समाज द्वारा 14 वाँ सामूहिक विवाह समारोह।

● उज्जैन (म.प्र)– समाज सेवी शान्ति माली ने समाज से आव्हान कि सभी अपने बच्चों को शिक्षित करने हेतु पहल करे।

● धार(म.प्र)– समाज सेवी सुरेश परमार को जिले में कानून व्यवस्था बनाने में दिये गये सहयोग के लिए जिला कलक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने सम्मानित किया।

● सांचोर (राज)– समाज की 550प्रतिभावों को मगनलाल माली चेयरमेन गुजरात ने सम्मानित किया।

● सिरोही(राज)– महात्मा जोतिराव फुले शिक्षण संस्थान द्वारा प्रतिभावन 158 विधार्थियों का सम्मान मोतीबाबा फुले ने किया।

● भीनमाल (राज)– संत लिखमीदास सेवा संस्थान द्वारा 15 वाँ जिला स्तरीय प्रतीभा सम्मान समारोह में 800 प्रतिभाओं को महेश सैनी (आई.ए.एस.)ए डॉ. अश्विन आर्य सैनी, प्रो. बाबूलाल देवड़ा ने सम्मानित किया एवं 3 विशिष्ट प्रतिभाओं को लेपटॉप भेंट किया।

● उदयपुर (राज)– टेकरी आदड़ी लिक रोड़ स्थित प्रांगण में समाज भवन बनाने हेतु शिलायास समारोह हुआ। उक्त जानकारी महेशचन्द्र गढ़वाल ने दी।

● बालोतरा (राज)– प्रेमचन्द्र सांखला ने प्रतिभा सम्मान समारोह ने कहा कि लक्ष्य निर्धारित कर, सतत महेनत और लगन से सफलता प्राप्त कर IAS, IPS, RAS, अथवा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में अपना जीवन बढ़ाया जा सकता है।

● भीलवाड़ा (राज)– संयुक्त राष्ट्र शैक्षिणक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन यूनेस्को क्लब का नेशनल सेमीयार एवं ट्रेनिंग केम्प नोयडा में अतिथियों ने समाज सेवी, पत्रकार गोपाल लाल माली को यूनेस्को की गतिविधयाँ बढ़ाने हेतु सम्मानित किया ।

● दौसा (राज)– कवि कृष्ण कुमार सैनी को साहित्य सारथी सम्मान लिने पर बधाई ।

● बिजनौर (उप्र.)– सैनी नव निमार्ण संकल्प अधिवेशन में प्रतिभावनों का सम्मान किया उक्त जानकारी मुकेश कुमार सैनी ने दी ।

● महू (मप्र.)– पत्रकार गजानंद रामी ने बताया कि शिवनारायण चावडा द्वारा पारिवारिक समारोह में समाज सेवीयों यादवलाल चौहान, गजानन्द रामी, कैलाश वर्मा आदि का सम्मान किया।

● समाज की और से महात्मा फुले का चित्र शिवनारायण चावड़ा को भेंट कर सम्मानित किया ।

● रोहतक (हरि.)– उप्र. के मुख्य मंत्री केशव प्रसाद मौर्य का सर्किट हाउस में सैनी समाज के प्रा.रामसरन सैनी, एस. डी. राकेश सैनी मनदीप सैनी मुकेश सैनी ने स्वागत किया पहली डाक्टर

● 22 नवम्बर 1864 को जन्मी रखमाबाई राऊत, महात्मा जोतीराव फुले एवं सावित्री बाई फुले, द्वारा शिक्षा के द्वार खोले जाने से बढ़ई समाज की पहली डॉ. बनने का गौरव मिला इनका विवाह डॉ. सखराम शाहू से हुआ। जे. जे. हास्पिटल मुम्बई में नौकरी करते हुए 1889 में एम. डी. करने इग्लैंड गई। प्रथम विश्व युद्ध में घायल सैनिकों का पुरस्कार 25 दिसम्बर 1955 को इनका परिनिवार्ण हुआ।

● पुणे (महा)– अखिल भारतीय माली महासंघ के चुनाव में सत्यशोधक शकरराव लिंगे अध्यक्ष रमेश हिरालकर कार्यध्यक्ष महादेव घोसे महामंत्री नामदेवराव करगणे, आकाश जी म्हेत्रे, प्रभाकर सातव, डॉ. देविदास शेन्डे उपाध्यक्ष संजय इनामदार कोषाध्यक्ष प्रा. पोपट माली कार्यालय सचिव, मनोहरराव बोचरे, सहसचिव का चुनाव हुआ।

● अहमदाबाद/गुजरात– भूपेन्द्र गेहलोत गेहलोत गुजरात सरकार में मजिस्ट्रेट हेतु वरियता सूचि में तृतीय स्थान पर चयनीत। बधाई।

● सवाई माधोपुर (राज)– कोमल सैनी चाकसू का नेशनल कबड्डी जालंधर प्रतियोगिता में चयनीत। बधाई ।

● डोडुका (राज)– पायल (टीना) सुपुत्री तेजराम माली ने बी.बी.ए की डिग्री प्रथम श्रेणी में उर्त्तीण की । बधाई।

● जलोर (राज)– क्रिकेट में 16 कबड्डी में 11 वालीवाल में 11 टीमो की प्रतियोगिता माली समाज महाकुम्भ द्वारा आयोजित।

● रायपुर– दीपेश सैनी पुलीस ऑफीसर गरियाबन्द से रायपुर स्थानातरित।

● रापर (गुज)– हेतल बेन निलेश भाई माली नगर पालिका वार्ड 4 से विजयी । बधाई।

● वैशाली (बिहार)– रोशन कुशवाह **UPS** की 65 वीं रैंक में सफल होकर वैशाली के डीडीसी बनने पर बधाई।

● दिल्ली। श्याम सुन्दर सैनी दिल्ली पुलीस में ए.सी.बी. बनने पर बधाई।

● सीकर (राज)– सुबीता सैनी पुत्री सुरेन्द्र सैनी का सहायक अभियंता जयपुर विद्युत वितरण कम्पनी में चयन। बधाई।

● नदभई भरतपुर (राज)– 8 मार्च को प्रथम आदर्श सामहिक विवाह सम्मेलन । सम्पर्क प्रेमसिंह सैनी अध्यक्ष 9887759264 ।

● इचलकराजी (महा)– सैनी माली नवयुवक मंडल की मीटिंग में समाज उत्थान के निमार्ण लिये गये।

● दिल्ली – मैराथन (42km) 22.02.19 को इन्जि. पवन सैनी कुमार सैनी सफल होने पर MCD ने सिल्वर मेडल दिया। बधाई।

● दिल्ली – ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज की त्रैमासिक राष्ट्रीय कार्यकारिणी की अध्यक्ष दिलबाग सिंह सैनी की अध्यक्षता में 3 मार्च को गुड़गांव में मिटिंग।

● सूरत (गुज)– अशोक देवड़ा चांदर माली समाज सूरत के अध्यक्ष मनोनीत। बधाई।

● जयपुर (राज)– बार कौंसिल जिसमें 25 सदस्य चुने जाते है उसमें ऐ चेयरमैन बार कोंसिल ऑफ राजस्थान के एड. चिरोंजीलाल सैनी चुने जाने पर बधाई ।

● बीबीपुर जाटान करनाल (हरि)– ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज के युवा अध्यक्ष राजकुमार सैनी उत्तरी हरियाणा की टीम ने गुलाबसिंह सैनी कनाड़ा का सम्मान किया।

संकलन

रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष

ज्ञानी से ज्ञानी मिले, हो गयी दो-दो बात।
और गधे से गधा मिले हो गयी दो-दो लात।।

कबीर दास

माँ बाप केवल बच्चे को जन्म दे सकते है, परन्तु 'शिक्षक' उन्हें बढ़ाते हैं, बनाते हैं, और समाज में इज्जत से रहने लायक इन्सानियत उसमें निमार्ण करते है।

महात्मा फूले

जिस प्रकार के लोग समाज में होते, वैसे ही नेता उनसे ही निमार्ण होते हैं।
जो लोगों की भावनाओं को नियंत्रित करता है। वही राज्यकर्ता हो सकता है।

मानव शात्री

"जिस दिन मनुष्य किसी का गुलाम बन कर रहता है, उसी दिन उसके आधे सद्गुन गायब हो जाते हैं, या निकाल दीये जाते हैं।"
जो अपना इतिहास भुलते हैं, वे कभी नया इतिहास निमार्ण नहीं कर सकते हैं।
अपने आत्मासम्मान को खोकर जिनसे मैं मर जाना अच्छा समझता हूँ।
व्यक्तिगत स्वार्थी लोग क्रान्ति नहीं ला सकते।

बाबासाहेब

फुले-आम्बेड़कर वादः- सत्य, समानता, मानवतावाद, विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित समाज को तैयार करते रहना, अर्थात श्रमण संस्कृति का निर्माण करना, यह इस विचारधारा उद्देश है।
जो लोग अपनी जाति या धर्म से प्रेम करते हैं, वे कभी भी राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर अपने देश और देशवासियों पर प्रेम नहीं कर सकते

काशीराम साहब